© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 14 Issue: 01 | January - March 2023
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

कामकाजी महिलायें : दोहरी भूमिका एवं समायोजन

डॉ राजेश कुमार सक्सेना
प्राध्यापक समाजशास्त्र
विजयाराजे शासकीय कन्या स्नातकोत्तर
महाविद्यालय मुरार, ग्वालियर (म0प्र0)

शोध सारांश

दोहरी भूमिका के विश्लेषण के लिये चार क्षेत्रों दृ घरेलू उत्तरदायित्व, दोहरी भूमिका से संतुष्टी, । स्वयं के विषय में की गई परिकल्पना एवं कार्य की विशिष्टता को चुना गया और पाया गया कि कार्योजन में संलग्न महिलायें घरेलू उत्तरदायित्वों एवं कार्यालयीन उत्तरदायित्वों का निर्वहन एक साथ करने में किसी प्रकार की कोई विशेष परेशानी नहीं होती। विवाहित महिला उत्तरदाताओं ने बताया । है कि कार्योजन में संलग्न होने के कारण उन्हें पर्याप्त समय परिवार के लिये नहीं मिल पाता। फिर भी वे अपने पति एवं बच्चों की इच्छाओं का ध्यान रखती हैं और उसे पूरा करने का प्रयास करती हैं। आधी से अधिक उत्तरदातायें अपनी दोहरी भूमिका से संतुष्ट हैं।

महिलाओं के अनुसार परिवार जनों का दृष्टिकोण उनके कार्य के प्रति सकारात्मक है। उनके द्वारा किये गये धनोपार्जन से उनके परिवार की आर्थिक स्तर में गुणात्मक सुधार एवं परिवर्तन हुआ है। वे चाहते हैं कि महिला अपने कार्य को भी आगे करती रहे। 43.4 प्रतिशत महिलायें अपने दोहरे दायित्वों का निर्वहन करने में कठिनाई का अनुभव कर रही हैं और इससे वे असंतुष्ट हैं। 55.0 प्रतिशत उत्तरदातायें अपने विषय में उच्च कोटि का प्रतिबिम्ब बनाये हुये हैं। ये महिलायें मानती हैं कि उनके कार्योजन में संलग्न होने से उनके व्यक्तित्व में अपेक्षाकृत सुधार हुआ है तथा परिवार व समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी है। इनमें उच्च एवं प्रतिष्ठित वर्ग की उच्च शिक्षा प्राप्त एवं युवा वर्ग की महिलायें सर्वाधिक हैं, पर निम्न व मध्यम जाति की, निम्न शिक्षा प्राप्त एवं प्रोढ़ व अति प्रोढ़ वर्ग की महिलायें अपने विषय में निम्न प्रतिबिम्ब बनाये हुये हैं। कार्य द्य की विशिष्टता कामकाजी महिलाओं के वैवाहिक जीवन को प्रभावित करती है। दो तिहाई से अधिक उत्तरदातायें घरेलू दायित्व को महत्वपूर्ण मानती हैं और इनमें विवाहित महिलाओं की संख्या सर्वाधिक है। घरेलू उत्तरदायित्व व व्यावसायिक उत्तरदायित्व में संघर्ष की स्थिति आने पर घरेलू दायित्व को महत्व देंगे। एक चौथाई से कुछ कम उत्तरदाता केरियर को ही महत्वपूर्ण मानती हैं। इनमें अविवाहित महिलाओं की संख्या सर्वाधिक है।

महिलाओं का कार्योजन में संलग्न होने पर उनके बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव, दाम्पत्य सम्बंध एवं परिवार व समाज की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण भी किया गया। 33.4 प्रतिशत महिलायें यह स्वीकार करती हैं कि उनके कार्योजन में संलग्न होने से उनके बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। नियंत्रण के अभाव में बच्चों में निरंकुशता बढ़ी है और वे माता–पिता के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं। जो महिलायें आर्थिक आवश्यकताओं से प्रेरित होकर व्यवसाय में संलग्न हुईं, वे बच्चों की शिक्षा, हिफाजत व सुरक्षा नहीं कर पा रही हैं और न ही उनमें अच्छा संस्कार विकसित हो पा रहा है जिस कारण उनके व्यक्तित्व का समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। एक चौथाई उत्तरदातायें यह मानती हैं कि उनके कार्योजन में संलग्न होने से उनके बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। बच्चों को उत्तम शिक्षा मिल रही है, वे स्वावलम्बी बन रहे हैं तथा उनमें व्यक्तित्व का समुचित विकास हो रहा है। उनके रने से उनके बच्चे अपने आप को गौरवान्वित महसस कर रहे हैं तथा उनके कार्यों में उन्हें सहयोग मिल रहा है। ही दाम्पत्य संबंधों का विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि विवाहित उत्तरदाताओं में सर्वाधिक अपने पति के प्रति कर्तव्यों का निर्वहन सरलता पूर्वक कर लेती हैं। उनका पति से संबंध सौहार्दपूर्ण एवं अच्छे हैं। 40.7 प्रतिशत उत्तरदातायें मानती हैं कि कार्य के दबाब के कारण उन्हें पर्याप्त समय नहीं मिल पाता जिस कारण घरेल दायित्वों का निर्वहन करने में कठिनाई हो रही है। उनके परिवार में अक्सर तनाव बना रहता है तथा लड़ाई झगड़े होते रहते हैं। परिवार व समाज की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने के बाद देखा गया कि परिवार के सदस्यों का उनके कार्य के प्रति स्पष्ट अनुमोदन प्राप्त था इसीलिये उनके पारिवारिक संबंध सौहार्दपर्ण हैं। लगभग एक तिहाई महिलाओं के सदस्यों का व्यवहार उनके कार्य के प्रति नकारात्मक (विरोधपूर्ण) था। महिलायें मानती हैं कि उनके रोजगाररत होने से परिवार के पुरूष सदस्यों के अहं को चोट पहुंची है। इनके परिवार का वातावरण तनाव पूर्ण है। स्थिति को सामान्य करने के लिये सर्वाधिक उत्तरदातायें समझौतावादी दृष्टिकोण अपनाती हैं। अपने पक्ष को प्रस्तुत कर उन्हें समझाने का प्रयत्न करती हैं।

महिलाओं को कार्योजन स्थल पर आ रही समस्याओं को भी विश्लेषित किया गया। हमने पाया कि आधी से अधिक उत्तरदातायें स्वेच्छा से कार्योजन में संलग्न हुईं हैं। 41 प्रतिशत आर्थिक दबाव के कारण व्यवसाय में आयीं। स्वेच्छा से कार्योजन में संलग्न महिलाओं में अविवाहित एवं युवा वर्ग की महिलाओं की संख्या अधिक है। आर्थिक दबाव के कारण सेवायोजन में संलग्न महिलाओ एवं प्रोढ़ व अतिप्रोढ़ वर्ग की महिलाओं की संख्या अधिक है। कार्योजन स्थल का वातावरण आग उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण में महिलाओं के लिए प्रतिकूल है। ये महिलायें मानती हैं कि समाज अवांछनीय तत्वों का बोलबाला अधिक हो गया है। अधिकारी तबके के लोग इन अवांछनीय तत्वों के दबाव में रहते हैं जिससे कार्य करने में कठिनाईयाँ पैदा होती हैं। एक चौथाई महिलाओं ने कार्योजन स्थल का वातावरण महिलाओं के लिये अनुकूल बताया। यदि महिलायें अपने कार्य के प्रति सचेत एवं जागरूक रहें तो कोई

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 14 Issue: 01 | January - March 2023
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

कठिनाई पैदा नहीं होगी। कार्योजन में संलग्न महिलाओं का एक न्यूनतम भाग यह मानता है कि उन्हें कार्योजन स्थल पर कभी–कभी अप्रिय स्थिति का सामना भी करना पड़ता है। इनमें अप्रिय व्यंग्य बाण, शरीरिक छेड़छाड़ और तथाकथित प्यार की पेशकश इनके न्योक्ताओं व पुरूष सहकर्मियों द्वारा किये जाते हैं। पुरूष अधिकारी व सहकर्मि किसी न किसी तरीके से उनका शोषण करते हैं। अनेक स्थानों पर परिस्थितियों से समझौता कर कुछ शोषण को सहन करती हैं और कुछ इसका विरोध।

कार्योजन स्थल पर कार्य के दौरान आधी से अधिक उत्तरदाताओं को किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं आती। 47.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं को सर्वथा या कभी–कभी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन कठिनाईयों में मुख्य रूप से प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व को बनाये रखने, अधिकारियों द्वारा अनावश्यक परेशान किये जाने, उनके कार्यों को पुरूषों की तुलना में अधिक महत्व दिये जाने, लोगों की ऊटपटांग बातों को सुनना व झेलना, सहकर्मियों के साथ मित्रता बनाये रखने आदि को उत्तरदाताओं द्वारा चिन्हित किया गया। महिलायें मानती हैं कि पुरूष सहकर्मि महिला को कमजोर व बेसहारा समझते हैं। महिलायें आपसी एकता, संगठन व आत्मविश्वास द्वारा इन समस्याओं का मुकाबला करने में सक्षम है। कार्योजन स्थल से जब महिलायें अपने घर वापस आती हैं तब 49 प्रतिशत उत्तरदातायें प्रसन्न व तनाव रहित मुद्रा में, 38.6 प्रतिशत उत्तरदातायें तनाव ग्रस्त व चिड़चिड़ाहट का भाव लेकर आती हैं। जो महिलायें कार्योजन स्थल पर तनावग्रस्त रहती हैं, वे कार्य के दबाव, कार्योजन स्थल का दूषित वातावरण तथा सहकर्मियों एवं अधिकारियों के व्यवहार को मुख्य रूप से उत्तरदायी ठहराया।

निष्कर्ष–

हम पाते हैं कि जिन महिलाओं के परिवार में पति या परिवार के अन्य सदस्य घरेलू कार्यों में सहयोग करते हैं और उनके कार्यों को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं वहाँ महिलाओं का पारिवारिक समायोजन उच्च स्तर का तथा जहाँ महिलाओं को सहयोग नहीं मिलता है और उनके कार्यों को नकारात्मक दृष्टिकोण से देखा जाता है वहाँ पारिवारिक समायोजन निम्न स्तर का है।

संदर्भ सूची–

1. प्रमिला कमूर, कमकाजी महिलाएं – रावत पब्लिकेशन, जयपुर
2. दिशा पाटानी, महिलाएं दिशा एवं दशा – रावत पब्लिकेशन, जयपुर
3. राम आहुजा, भारतीय समाज – रावत पब्लिकेशन, जयपुर